सीटियां बजाईं व गले मिले, याद किए गुजरे पल

• बीएचयू : मोर्वी हॉस्टल में जुटे वर्ष 1982 बैच के आईटी छात्र

वाराणसी, बीएचयू प्रतिनिधि : न हम बिछड़े थे और न ही बिछड़ेंगे। मिलजुल कर काशी हिंदू विश्वविद्यालय की गरिमा को और बुलंदियों तक ले जायेंगे। आखिर हम जो कुछ भी हैं यहां से मिले ज्ञान की बदौलत ही तो हैं। हमारा भी दायित्व है कि हम इसकी पताका को सबसे ऊंचा रखे। कुछ इन्हीं संकल्पों के साथ काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित प्रौद्योगिकी संस्थान के वर्ष 1982 बैच (सिल्वर जुबली बैच) के पूर्व छात्र मंगलवार को मोर्वी हॉस्टल में जुटे और अपने सहपाठियों को देखते हुए लिपट पड़े। आज कहीं अधिशासी तो कहीं अधिकारी पद का दायित्व संभालने वाले इन पूर्व छात्रों की स्मृतियों में उनके विद्यार्थी जीवन की यादें उभर गईं। हर किसी के चेहरे पर विद्यार्थीपन ही छलक रहा था। हॉस्टल की लॉबी में खड़े होकर उन्होंने सीटी बजायी और मेस महराज के हाथ का बना खाना भी खाया।

अपने बच्चे और पत्नियों के साथ यहां पहुंचे इन पुरनियों के चेहरे का अंदाज ही आत्मीय खुशी से लबरेज दिखा। बोले हॉस्टल का कमरा और

मोर्वी छात्रावास परिसर में बीते दिनों की याद ताजा करते 1982 बैच के 'आईटियंस'।

हरियाली, वही सुकून, वही शांति। ऐसा कहीं देखने को नहीं मिलता। आज तो विद्यार्थियों को काफी सुविधाएं मिल रही है शिक्षण का स्तर भी बढ़ा है। बोले हमारे बैच में सिर्फ एक छात्रा थीं आज आईटी में छात्राओं की काफी संख्या है। सिर्फ साइकिलें ही थीं। बैच में सिर्फ दो या तीन छात्र थे जिनके पास मोपेड थी। आज तो ऐसा लग रहा है जैसे हर विद्यार्थी के पास दो पहिया वाहन हैं वैसे यह आज की जरूरत भी है। वर्ष 1977 से 1982 के बीच हमने तीन-तीन साइनडाई (अनिश्चित कालीन बंदी) झेली थी इसके बाद भी उत्साह में कमी नहीं आई। आज ऐसा नहीं होता सुनकर अच्छा लगता है। इस मौके पर डॉ. पीके मिश्रा, डॉ. आरके सिंह, डॉ. एलपी सिंह आदि ने भागीदारी की। इस सम्मिलन में 107 पूर्व छात्र शामिल हुए। इन छात्रों ने विभागाध्यक्षों से मुलाकात की।

...और नहीं बदला तो अपना बीएचयू

वाराणसी : प्रौद्योगिकी संस्थान के वर्ष 1982 बैच के पूर्व छात्र राजेंद्र कुमार आज की तारीख में मध्य प्रदेश के इंदौर रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक हैं। मोर्वी हॉस्टल में मुलाकात के दौरान स्मृतियों में डूबे और बोले दौर तो काफी बदल गया और नहीं बदला तो अपने बीएचयू का वातावरण। यहां आने के बाद लग ही नहीं रहा है कि मैं अधिकारी हूं। वही आभा, वही सहपाठी एकदम नया-नया सा महसूस कर रहा हूं। कहा विद्यार्थी जीवन में जिस दुकान पर बैठकर चाय पीता था आज भी वहीं पी और रिक्शे पर बैठकर अपने उस दौर को जीया। हम बीएचयू को नहीं भूल सकते क्योंकि इसी ने हमारे मुकद्दर को नया आयाम दिया है। यह जानकर काफी सुकून मिल रहा है कि अब बीएचयू में छात्र आंदोलन नहीं होते।

मैदान में चहलकदमी आज तक नहीं भूला। गलबहियां किए जब निकलते थे तो जो सुकून मिलता था उसकी यादें ही रह गई हैं। अल्युनी सेल व इंस्टीट्यूट इंडस्ट्री पार्टनरशिप सेल के तत्वावधान में आयोजित इस सम्मिलन में शिरकत करने वाले पूर्व छात्रों ने हॉस्टलों में अपने कमरे तो देखे ही इनमें आज रह रहे विद्यार्थियों का भी हालचाल जाना। विभागों व कक्षाओं तक चहलकदमी की। यहां पहुंचे मयंक पारिख, जे शिवशंकर, केवीएस मनियन, शिवा गुलवाड़ी, अजय कुमार सिंह, अरविंदा बनर्जी, एनएन अंसारी, देवीशीष भट्टाचार्या, श्रीकांत राव आदि ने कहा कि आज भी अपना बीएचयू बिलकुल वैसा ही दिखता है जैसा मेरे समय में था। वही

मन नहीं माना और चली आई...

वाराणसी : प्रौद्योगिकी संस्थान के वर्ष 1982 बैच के पूर्व और अकेली छात्रा रीता अग्रवाल बातचीत के दौरान तो भावुक हो गई और बोली मैं वाराणसी की ही रहने वाली हूं और अब अमेरिका के मिसिसिपी स्टेट में रह रहीं हूं। जैसे ही सूचना मिली कि हमारे बैच के छात्र जुटने वाले हैं तो मन नहीं माना और चली आई। आज भी उस दौर की ही तरह सिंहद्वार से पैदल ही मंदिर तक पहुंची। कैसा लग रहा के सवाल पर बोली महसूस हो रहा है जैसे मेरी उस 25 वर्ष कम हो गई है। ठठेरी बाजार से यहां आने में जो परेशानी होती थी आज भी उसी परेशानी को झेला लेकिन एक अजीब सी खुशी थी। कोई तनाव नहीं था। आज की छात्राओं के लिए उन्होंने संदेश दिया कि ईमानदारी से परिश्रम करें तो मंजिल उनके कदमों में होगी।